1

दिन-रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ...

दिन - रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ।।टेक।
तेरी शान्त-मूरत मुझे भा गई है।
मेरे नयनों में नजर आ गई है।
मैं अपने में अपने को कैसे समाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ।।१।।
मैं सारे जहाँ में कहीं सुख न पाया।
है गम का भरा गहरा दरिया है छाया।
ये जीवन की नैया मैं कैसे तिराऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ।।२।।
यही आस जिनवर-शरण पाऊँ तेरी,
मिट जाये मेरी ये भव-भव की फेरी।
शरण दो, तुम्हें नाथ शीश नवाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ।।३।।
तेरी सौम्य मुद्रा हे त्रिभुवन मे अनुपम,
तेरी वीतरागी परिणति हे अद्भुत।
मै तुझको ही पूजु मै तुझको ही ध्याउँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ।।४।।

हे जिनेन्द्र भगवान! अब मैं प्रतिसमय आपके ही गुणगान करता हूँ और अपने भक्ति रुपी भावों के पुष्प आपके चरणों में समर्पित करता हूँ ।।टेक।।

हे प्रभो! मुझे आपकी शान्त मुद्रा अच्छी लगती हैं और मेरी आँखो को आपकी यह वीतरागी मुद्रा सुहाती हैं। हे प्रभो! कृपया बतायें कि मैं अपने आत्मा में किस तरह रमण कर सकता हूँ अर्थात् आत्मानुभूति कैसे करुँ?।।१।।

हे स्वामी! मैनें चारों गति में कहीं भी सुख प्राप्त नहीं किया। चारों ओर संसार में दुखों का सागर ही दिखाई पडता हैं। मैं अपने जीवन की नाव को इस संसार सागर से कैसे पार लगाऊं?।।२।।

हे जिनवर! अब मेरी एक ही भावना है कि मैं आपकी शरण को प्राप्त करुँ, जिससे मेरा संसार में आवागमन रुक जायें। हे नाथ! आप मुझे अपनी शरण में ले लो, मैं आपको नमस्कार करता हूँ और अपने भक्ति रुपी भावों के पुष्प आपके चरणों में समर्पित करता हूँ ।।३।।

हे भगवान! आपकी सौम्य मुद्रा तीनों ही लोकों में अनुपम है, आपकी वीतरागी परिणति (दशा) अद्भुत है। आपके निस्पृह स्वभाव के भान से मैं अब आप ही की पूजा–वंदना करता हूँ, आप ही के द्रव्य–गुणों का ध्यान करता हूँ। हे वीतरागी देव! आपके चरणों में ही मेरे भाव समर्पित हो जाये।।४।।